

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

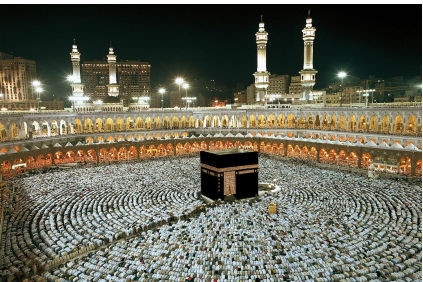
मैं कौन, मेरा कौन...!

31-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम्हारे जैसा सौभाग्यशाली कोई नहीं,

क्योंकि जिस बाप को सारी दुनिया पुकार रही है वह

तुम्हें पढ़ा रहे हैं, तुम उनसे बातें करते हो"



पूछते हैं अपने दिल से हम कितने महान है...
दुनिया जिसको ढूँढती है वह हम पर कुर्बान है

वाह रे मैं...



इस जहाँ में है और न होगा मुझसा कोई भी
खुशानसीब
तुने मुझको दिल दिया है मैं हूँ तेरे सबसे
करीब...

वाह रे मैं...



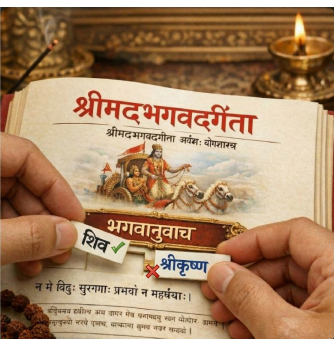
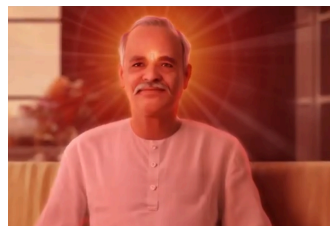
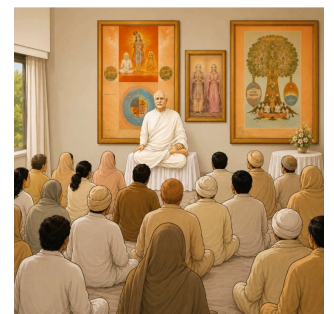
प्रश्न:- जिन बच्चों को विचार सागर मंथन करना
आता है, उनकी निशानी क्या होगी?



उत्तर:- उनकी बुद्धि में सारा दिन यही तात लगी
रहती कि कैसे सबको रास्ता बतायें! कैसे किसका
कल्याण करें! वह सर्विस के नये-नये प्लैन बनाते
रहते हैं। उनकी बुद्धि में सारा ज्ञान टपकता रहता है।
वे अपना टाइम वेस्ट नहीं करते।



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



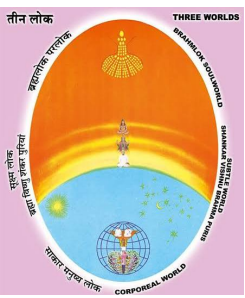
31-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। बच्चों के आगे निराकार परमपिता परमात्मा बोल रहे हैं, यह बच्चे ही जानते हैं। भगवान को ऊंच कहा जाता है। ऊंचा उनका ठांव है। रहने का स्थान तो मशहूर है। बच्चे जानते हैं हम मूलवतन में रहने वाले हैं। मनुष्यों को इन सब बातों का पता नहीं है। गॉड फादर बोलते हैं। तुम बच्चों बिगर ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसको पता हो कि निराकार भगवान बोलते हैं। निराकार होने के कारण कोई की बुद्धि में नहीं आता है कि भगवानुवाच कैसे हो सकता है। पता न होने के कारण गीता में श्रीकृष्ण का नाम दे दिया है। अब बच्चों के आगे बोल रहे हैं। सम्मुख होने बिगर तो सुन नहीं सकते। दूर से भल सुनते हैं परन्तु निश्चय नहीं होता। सुनते तो हैं भगवानुवाच। यथार्थ रीति तुम जानते हो। भगवान तो शिवबाबा है। प्रैक्टिकल में जानते हो बाबा हमको ज्ञान सुना रहे हैं। तुम्हारी बुद्धि झट ऊपर में चली जाती है। शिवबाबा ऊंच ते ऊंच रहने वाला है। जैसे कोई बड़े आदमी, क्वीन आदि आती है तो जानते हैं यह फलानी जगह की रहने वाली है, इस समय यहाँ आई है। तुम बच्चे भी जानते हो बाबा आया है हमको ले जाने। हम भी बाबा के साथ वापिस

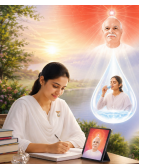
वाह रे मैं...

चढ़ाओ नशा...

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



असफलता एक चुनौती है, उसे स्वीकार करो क्या कमी रह गई उसे देखो और सुधार करो जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम, कुछ किये बिना ही जय जय कार नहीं होती कोशिश करने वालों की *कभी* हार नहीं होती।



पूछते हैं अपने दिल से हम कितने महान हैं... दुनिया जिसको इंदुती हैं वह हम पर कुर्बान है



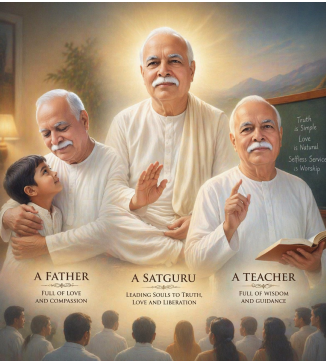
वाह रे मैं.. स्वयं भगवान मुझे पढ़ाते हैं।



जायेंगे। हम परमधाम के रहने वाले हैं। तुमको अब बाप और घर याद पड़ता है। वही बाप सृष्टि का रचयिता है। बाप ने आकर तुम बच्चों को मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन का राज समझाया है। जिसकी बुद्धि में है वही समझेंगे। बरोबर हम पुरुषार्थ कर रहे हैं भविष्य 21 जन्मों के लिए, बाप से वर्सा लेने। पुरुषार्थ तो करना ही है। पुरुषार्थ को कभी भी छोड़ना नहीं है। स्कूल के बच्चे जानते हैं जब तक इम्तिहान हो तब तक हमको पढ़ना ही पढ़ना है। एम आब्जेक्ट रहती है। हम बड़े ते बड़ा इम्तिहान पास करेंगे। एक कॉलेज छोड़ दूसरे, तीसरे में जायेंगे। मतलब तो पढ़ते रहना है। बड़े आदमी का बच्चा होगा तो जरूर बड़ा इम्तिहान पास करने का ख्याल होगा। तुम जानते हो हम बहुत बड़े बाप के बच्चे हैं। दुनिया में किसको पता नहीं है - हम शिवबाबा की सन्तान हैं। तुम बहुत बड़े ऊंच ते ऊंच बाप के बच्चे हो। बहुत बड़ी पढ़ाई पढ़ते हो। जानते हो यह ऊंच ते ऊंच पढ़ाई है। पढ़ाने वाला बाप है तो कितना उमंग और खुशी में रहना चाहिए। यह किसको भी समझा सकते हो। हम बहुत बड़े ते बड़े बाप के बच्चे हैं। बहुत बड़े सतगुरु की मत पर हम

चढ़ाओ नशा...

दादा अम्मा



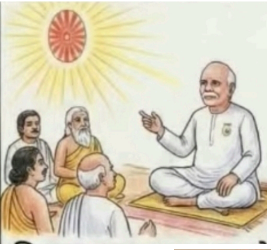
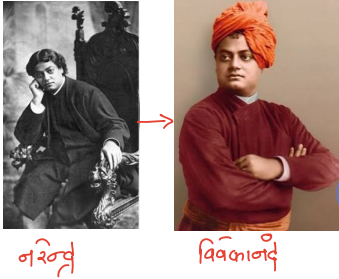
चलते हैं। टीचर की, गुरु की मत पर चलना होता है ना। उनको फालोअर कह देते हैं। यहाँ बाप की मत पर भी चलना है, टीचर की मत पर भी चलना है, तो गुरु की मत पर भी चलना है। तुम जानते हो वह हमारा बाप, टीचर, सतगुरु है। उनकी मत पर जरूर चलना है। यह तो एक ही है - ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा, वह बोलते हैं।



बाबा बच्चों से पूछते हैं शिवबाबा बोलते हैं, अच्छा शंकर बोलते हैं? ब्रह्मा बोलते हैं? विष्णु बोलते हैं? (किसी ने कहा शिव और ब्रह्मा बोलते हैं विष्णु वा शंकर नहीं बोलते) विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण कहते हो तो फिर क्या बोलते नहीं हैं? गूंगे हैं? (ज्ञान नहीं बोलते) हम ज्ञान की बात ही नहीं करते, बोलने की बात पूछता हूँ। विष्णु, लक्ष्मी-नारायण बोलते हैं? शंकर नहीं बोलते हैं - वह ठीक है। बाकी तीनों क्यों नहीं बोलेंगे। विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण हैं तो जरूर बोलेंगे ना। मनुष्य शिवबाबा के लिए समझते



31-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



होंगे कि वह निराकार कैसे बोलेंगे। तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा भी इसमें आकर बोलते हैं। ब्रह्मा को भी बोलना होता है। एडाप्टेड हैं ना। संन्यासी लोग भी अपना नाम संन्यास के बाद बदली करते हैं। तुमने भी संन्यास किया है, तो तुम्हारा नाम बदलना

चाहिए। पहले बाबा ने नाम रखे। परन्तु देखा कि नाम रखे हुए भी मर पड़ते हैं- आश्चर्यवत सुनन्ती, कथन्ती, भागन्ती हो जाते हैं, इसलिए कितने नाम रख कितने का रखें। आजकल तो माया भी बहुत



तेज है। बुद्धि कहती है जब लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो उसको विष्णु पुरी कहा जाता था। यह एम आब्जेक्ट बुद्धि में है। विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण राज्य करते हैं तो बोलते क्यों नहीं होंगे! बाबा यहाँ की बात नहीं करते हैं। मनुष्य तो कहेंगे निराकार कैसे बोलेंगे। उनको यह पता ही नहीं है कि



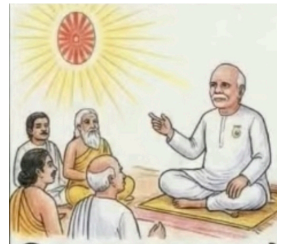
निराकार कैसे आते हैं। उनको पतित-पावन कहते हैं। वह ज्ञान का सागर भी है, चैतन्य भी है, प्यार का सागर भी है। अब प्यार प्रेरणा से तो होता नहीं है,



वह भी इसमें प्रवेश कर बच्चों को प्यार कर सकते हैं ना, तब कहते हैं हम परमपिता परमात्मा की गोद में आते हैं। बस बाबा तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से सुनूँ...

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

बुद्धि उस तरफ चली जाती है। श्रीकृष्ण बुद्धि में नहीं आता है। तो बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं। तुम्हारे जैसा सौभाग्यशाली कोई है नहीं। तुम जानते हो हम कितने ऊंच पार्टधारी हैं। यह खेल है ना। इसके पहले तो तुम कुछ नहीं जानते थे। अभी बाप ने प्रवेश किया है तो ड्रामा प्लैन अनुसार उन द्वारा सुन रहे हैं।



वाह रे मै...

स्वयं भगवान मेरे भाग्य के गुणगान करते...



वाह मेरा बाबा वाह...

वाह रे मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा वाह...

वाह ड्रामा वाह...

वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य वाह...

मैं कौन, मेरा कौन...!



ये शिव बाबा है

मैं सबका बाप हूँ।



विशाल बुद्धि

परमधाम जाना है क्योंकि ड्रामा का चक्र अब पूरा होता है। यह भी तुम जानते हो कि यह बहुत गन्दी दुनिया है। परमात्मा को तो कोई भी नहीं जानते, न जानेंगे इसलिए कहा जाता है विनाश काले विपरीत बुद्धि। उन्हीं के लिए तो यह नर्क ही स्वर्ग के समान है। उन्हीं की बुद्धि में यह बातें बैठ न

Points: ज्ञान, योग, धारणा, सेवा, M.limp.

19-11-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

सकें। तुम बच्चों को यह सब विचार सागर मंथन करने के लिए बहुत एकान्त चाहिए। यहाँ तो

चढ़ाओ नशा...

बाप कहते हैं - मीठे-मीठे बच्चों तुम जानते हो बाबा निराकार है। वह हम आत्माओं का बाप है। यह बातें कोई भी शास्त्र आदि में लिखी हुई नहीं हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि विशाल हुई है। स्टूडेंट पढ़ते हैं, बुद्धि में सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी आ जाती है। परन्तु यह किसकी बुद्धि में नहीं है - बाबा कहाँ हैं! यथार्थ रीति तुम बच्चे ही समझते हो और प्रैक्टिकल में वह खुशी है। बाबा परमधाम से आते हैं, हमको पढ़ाते हैं। सारा दिन आपस में यही रूह-रिहान होनी चाहिए। सिवाए इस ज्ञान के बाकी सब हैं सत्यानाश करने वाली बातें। शरीर निर्वाह अर्थ तुमको धन्धा आदि भी

ये पक्का समझ लो..

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

करना है और साथ-साथ यह रूहानी सर्विस भी।

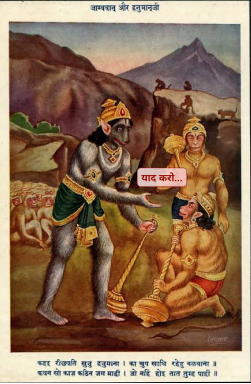
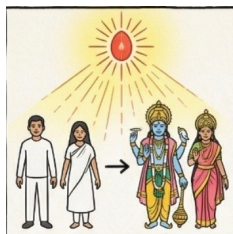


तुम जानते हो बरोबर यह भारत स्वर्ग था। इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। जो भी देवताओं के चित्र हैं, उनका यथार्थ ज्ञान बुद्धि में आ गया है। नम्बरवन लक्ष्मी-नारायण का चित्र उठाओ, विचार करो बरोबर यह भारत में राज्य करते थे तो एक ही धर्म था। रात पूरी हो दिन शुरू हुआ अर्थात् कलियुग पूरा हो सतयुग शुरू हुआ। कलियुग है रात। सतयुग है सुबह। विचार सागर मंथन करना है कि इन्होंने यह राज्य कैसे पाया। जैसे कहा जाता है सागर में पत्थर डालो तो लहरें उठेंगी। तो तुम भी पत्थर मारो, मनुष्यों को समझाओ। यह ख्याल करो, भारत में देवी-देवताओं का राज्य था ना, जिन्होंने ही फिर भक्ति मार्ग में मन्दिर बनाये हैं, जिसको फिर लूट गये हैं। कल की बात है। अभी भक्ति मार्ग है तो जरूर उसके आगे ज्ञान मार्ग होगा। यह सब बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में हैं। बाप भी आकर अपनी जीवन कहानी बताते हैं। तुमको यह याद क्यों नहीं पड़ती



31-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

है। बाबा आकरके हमको यह सारी नॉलेज सुनाते हैं, समझ भी चाहिए ना। किसको भी यही बात सुनाओ। यह चित्र है एम आब्जेक्ट। यह लक्ष्मी-नारायण तो सबसे बड़े किंग क्वीन हो गये हैं। भारत स्वर्ग था ना। कल की बात है। फिर इन्होंने यह राजगद्दी कैसे गँवाई। अपने बच्चे भी भल यह सब सुनते हैं परन्तु कभी बुद्धि में टपकता नहीं है। बुद्धि में याद भी नहीं आता। अगर याद आता है तो औरों को भी समझा सकते हैं। है तो बहुत सहज। तुम यहाँ आते हो लक्ष्मी-नारायण जैसा बनने। समझाया गया है 5 हजार वर्ष की बात है। इससे लांग-लांग एगो कोई होता नहीं। सबसे पुराने ते पुराने भारत की कहानी यह है। रीयल्टी में सच्ची-सच्ची कहानी यह होनी चाहिए। सबसे बड़ी कहानी यह है। इन्हों का राज्य था, अभी वह राज्य है नहीं। जरा भी किसको पता नहीं है। तुम्हारी बुद्धि में नम्बरवार टपकता है। बाप कहते हैं - मुझे याद करो। वह भी पूरी रीति कोई याद नहीं करते हैं। बाप बिन्दी है, हम भी बिन्दी हैं, यह भी बुद्धि में ठहरता नहीं। कोई-कोई की बुद्धि में तो अच्छी रीति टपकता है। किसी को बैठ समझाते हैं तो 4-5 घण्टे भी लग जाते हैं। यह बहुत



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



31-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



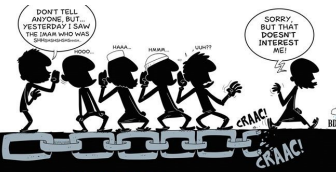
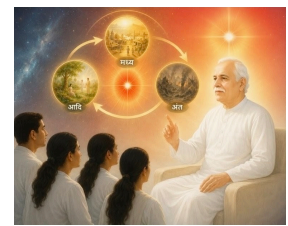
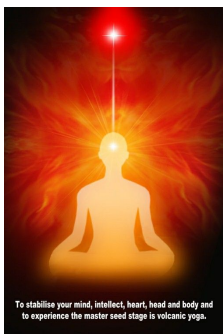
वन्दरफुल बातें हैं। जैसे सत्य नारायण की कथा बैठकर सुनते हैं ना। 2-3 घण्टे बैठ सुनते हैं, जिसकी दिलचस्पी होती है। इसमें भी ऐसे हैं, जिसको बहुत रूचि होगी उनको और कुछ सूझेगा ही नहीं। बस यह बातें समझने में ही मजा आता है। यह बातें अच्छी लगती हैं। समझते हैं बस इस सर्विस में ही लग जायें, दूसरा धन्धा-धोरी आदि सब छोड़ दें। परन्तु ऐसे तो कोई को बैठना नहीं है। तो तुम बच्चे यह सत्य-नारायण की कहानी सुन रहे हो। अभी तुम्हारी बुद्धि में कितनी अच्छी बातें रमण करती हैं। हम यह वक्खर (सामग्री) डिलेवरी करने के लिए एवररेडी हैं। वक्खर हमेशा रेडी होना चाहिए। यह चित्र भी तुम दिखाकर किसको भी समझा सकते हो - इन लक्ष्मी-नारायण को यह राज्य कैसे मिला। कितना वर्ष आगे यह विश्व के मालिक थे। उस समय सृष्टि में मनुष्य कितने थे, अभी कितने हैं। कुछ न कुछ पत्थर डालना चाहिए तो विचार सागर मंथन चले। अपने इस कुल का होगा तो झट लहर जायेगी। अपने कुल का नहीं होगा तो कुछ भी समझेंगे नहीं, चले जायेंगे। यह नब्ज देखने की बात है। तुम्हें सिवाए इस मीठे-मीठे ज्ञान के बाकी कुछ भी बोलना

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

ये तो पक्का कर लो..



31-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



नहीं है। अगर ज्ञान के सिवाए कुछ भी बोलते हैं तो समझो वह ईविल है, उनमें कोई सार नहीं है। हमारे पास ऐसे बहुत बच्चे हैं जिन्हें सुनने का बड़ा शौक होता है। बाप समझाते हैं- ईविल बात तो कभी भी सुननी नहीं चाहिए। कल्याण की बातें ही सुनो। नहीं तो मुफ्त अपनी सत्यानाश कर देंगे। बाप तो आकर तुम्हें ज्ञान ही सुनाते हैं। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज समझाते हैं। कहते हैं ~~और~~ कोई भी बात मत करो, इसमें बहुत टाइम वेस्ट करते हो। फलाना ऐसे है, वह ऐसा करता है... उसे ईविल कहा जाता है। दुनिया की बात अलग है, तुम्हारा तो एक-एक सेकेण्ड का टाइम बहुत वैल्युबुल है। तुम कभी भी ऐसी बातें नहीं सुनो, नहीं करो। इससे तो तुम बेहद के बाप को याद करो तो तुम्हारी बहुत कमाई है। जहाँ तहाँ बाप का परिचय जाकर दो। यही रूहानी सर्विस करते रहो।



Great
Swamaan

सच्चे-सच्चे महावीर तुम हो। बस सारा दिन यही तात रहे कोई हो जिसे यह रास्ता बतायें। बाप कहते

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



31-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

हैं मुझ अल्फ को याद करो तो बे बादशाही मिल जायेगी। कितना सहज है। ऐसे-ऐसे जाकर सर्विस करनी चाहिए। बच्चों को सर्विस पर बहुत ध्यान देना चाहिए। अपना और दूसरों का कल्याण करना चाहिए। बाप भी तुम बच्चों को समझाने के लिए ही आये हैं ना। तुम बच्चे भी आये हो पढ़ने और पढ़ाने। टाइम वेस्ट करने या सिर्फ रोटियाँ पकाने तो नहीं आये हो। सारा दिन बुद्धि सर्विस में चलनी चाहिए। अच्छा!



मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



31-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन धारणा के लिए मुख्य सार:-



1) जो बातें अपने काम की नहीं हैं उन्हें सुनने वा बोलने में अपना समय वेस्ट नहीं करना है। जितना हो सके पढ़ाई पर पूरा-पूरा ध्यान देना है।

वाह रे में..
स्वयं भगवान
मुझे पढ़ाते हैं।



2) सदा खुशी और उमंग में रहना है कि हमें पढ़ाने वाला कौन है। पुरुषार्थ को कभी छोड़ना नहीं है। मुख से ज्ञान रत्न ही निकालने हैं।

"लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की *कभी* हार नहीं होती।

एक नहीं सी चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
मेहनत आखिर उसकी बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की *कभी* हार नहीं होती।

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जा कर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही सच्चे मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की *कभी* हार नहीं होती

Last but not the least...

असफलता एक चुनौती है, उसे स्वीकार करो
क्या कमी रह गई उसे देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम,
कुछ किये बिना ही जय जय कार नहीं होती
कोशिश करने वालों की *कभी* हार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की *कभी* हार नहीं होती।"

Points: Golden = शान, Red = ध्यान, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



31-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
 वरदान:- समझदार बन तीन प्रकार की सेवा साथ-
 साथ करने वाले सफलतामूर्त भव

Finale Achievement



वर्तमान समय के प्रमाण मन्सा-वाचा और कर्मणा
 तीनों प्रकार की सेवा साथ-साथ चाहिए।

वाणी और कर्म के साथ मन्सा शुभ संकल्प वा श्रेष्ठ
 वृत्ति द्वारा सेवा करते रहो तो फल फलीभूत हो
 जायेगा क्योंकि

ये पक्का समझ लो..



वाणी में शक्ति तब आती है जब मन्सा शक्तिशाली हो,
 नहीं तो बोलने वाले पण्डित समान हो जाते क्योंकि
 तोते मुआफिक पढ़कर रिपीट करते हैं।

ज्ञानी अर्थात् समझदार तीनों प्रकार की सेवा साथ-
 साथ करते और सफलता का वरदान प्राप्त कर लेते
 हैं।



स्लोगन:- अपने हर बोल, कर्म और दृष्टि से हर
 आत्मा को शान्ति, शक्ति व खुशी का अनुभव कराना
 ही महान आत्माओं की महानता है।

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

A collage of three images. The top image shows a female teacher in a white shirt with a school crest and a female student in a purple school uniform sitting at a wooden desk, looking at a laptop. A circular inset in the top left shows two students, one in white and one in purple, talking. The bottom image is a close-up of two hands clasped in prayer on a wooden surface, with a bright sunburst effect in the background.

साधु और बिच्छू की कहानी

प्रेरणादायक कहानी

[illegible]

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

If you wish to stay connected, Here is the link



BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009

Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26

Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26

Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place

Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

AV: 15/03/2010

Revise: 31/05/2026

Subtle Psychology

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है।

और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वतः ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है बाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

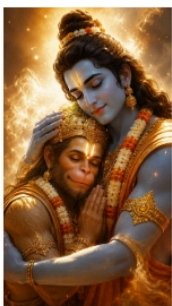
12.3.2. रात को सोने की विधि और उससे फायदा:



(अ) बाबा कहते हैं लक्ष्मी-नारायण के चित्र के सामने जाकर बैठो। रात को भी बैठ सकते हो। इन लक्ष्मी-नारायण को देखते-देखते सो जाओ। “अहो! बाबा हमें ऐसा बनाते हैं!” तुम ऐसा अभ्यास करके देखो कितना मजा आता है! फिर सुबह को अपना अनुभव सुनाओ।



(आ) कई बार कहा है — रात को जब सोते हो, तो आधा घण्टा बाप की याद में बैठ जाना चाहिए। कम से कम आधा घण्टा याद में बैठो, फिर सवेरे उठ कर याद करो तो अवस्था अच्छी रहेगी। रात को बाबा की याद में बैठने का नियम रखो तो बहुत अच्छा है। योग में रहने वालों को बाबा मदद भी देते हैं। आपे ही आँखें खुल जायेंगी। खटिया हिल जायेगी। बाबा बहुतों को उठाते हैं। रात को बाबा की याद में सोयेंगे तो सुबह को बाबा आकर खटिया हिलायेंगे। ऐसा भी बहुत अनुभव लिखते हैं। हिम्मत बच्चे मददे बाप तो है ही। अपने ऊपर अटेन्शन रखो। बेहद का बाप कितना रहम करते हैं! बाप की मदद अनुभव करने के लिए मोस्ट बिलवेड बाप को बड़े प्यार से याद करना है।



(इ) बच्चे, यह भी कायदा है जास्ती खाने वाले को जास्ती नींद आयेगी। याद में रहेंगे तो खुशी में खाना भी बहुत थोड़ा खायेंगे। नींद भी बच्चों को टाइम पर करनी चाहिए।